अध्याय--3

प्रेमचंद और हिन्दी कहानी

प्रेमचंद और हिन्दी कहानी

1. .पूर्व प्रेमचन्द युग और हिन्दी कहानी

2. स्वाधीनता आन्दोलन और प्रेमचन्द

3. आधुनिकता एवं हिन्दी कहानी और प्रेमचन्द

1-पूर्व प्रेमचन्द युग और हिन्दी कहानी

मानव की सृष्टि के साथ ही साथ कहानी का भी जन्म हुआ है। कहानी का जन्म मानव हृदय की उस स्पृहा, उत्कंठा और कौतूहल के ही द्वारा हुआ है जो सृष्टि की अलौकिक वस्तुओं, दृश्यों और प्राणियों को देखकर उसके हृदय में जागृत हो उठा था। यही कारण है कि विश्व के सभी देशों में कहानी का प्रारम्भ ऐसी कहानियों के द्वारा हुआ है, जो कौतूहल वर्धक, चमत्कारों से पूर्ण एवं साथ ही साथ अलौकिकता से परिपूर्ण है। ये कहानियॉ आदिकाल की हैं पर आज भी छोटे बच्चे उसे अड़े चाव से सुनते हैं।

हिन्दी भाषा का 'कहानी' शब्द संस्कृत के 'कथानिका' शब्द से बना है---कथानिका---कहानिका--- कहानी।

डॉ. शशिभूषण सिंह कहानी के विषय में लिखते हैं कि " अग्निपुराण में भयानक आनन्ददायक, करुण तथा अद्‌भुत प्रभाव डालने वाली घटनाओं की रचना को 'कथानिका' कहा गया है। 'कथा' शब्द को भी कहानी की संज्ञाा से अभिहित किया जाता है। 'कथा' का साामान्य अर्थ है- जो (किसी से) कहा जाए।'' 1

कहानी को अंग्रेजी में स्टोरी (Story) कहा जाता है। स्टोरी का अगर हम शब्दकोष में अर्थ देखें तो यह होता है--- " An account of an incident (true or invented) यानी कि '' किसी सत्य या काल्पनिक घटना को मौखिक या लिखित रुप में वर्णित करना। इसका एक और अर्थ होता है --" historical narrative or anecdote" अर्थात्‌ -- एक ऐतिहासिक इतिवृत्तात्मक वर्णन।

जिस तरह से कहानी सत्य या काल्पनिक घटनाओं पर ही आधारित होती है, उसी तरह से वे ऐतिहासिक घटनाओं पर भी आधारित होती है। कहानी की विभिन्न विद्वानों द्वारा विभिन्न परिभाषाऐ दी गई हैं जो इस प्रकार है---

" महेन्द्र उमाशंकर सतीष के अनुसार " जो एक घंटे में पढ़ी जा सके। (Fiction that combe read in an hour)

अज्ञेय के अनुसार -- कहानी जीवन की प्रतिच्छाया है और जीवन स्वयं एक अधूरी कहानी है।

कहानीकार एवं उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द के अनुसार-- कहानी एक ऐसा उद्यान है, जो भॉति-भॉति के फूल, बूटे,बेलें, सजे हुए हैं, बल्कि एक ऐसा गमला है जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने समुन्नत रूप में दृष्टिगोचर होता है।'' 2

साहित्य दर्पण में " कथा'' का लक्षण इस प्रकार है " कथायां सरसं वस्तु गद्यैरेव विनिर्मितम्, अर्थात गद्यात्मक सरस वस्तु कथा है। 3

शिवकुमार मिश्र के अनुसार "कहानी एक संक्षिप्त, कसावपूर्ण, कल्पना-प्रसूत विवरण है। जिसमें एक प्रधान घटना होती है और एक प्रमुख पात्र होता है। इसमें एक कथावस्तु होती है। जिसका विवरण इतना सूक्ष्म होता है तथा निरूपण इतना संगठित होता है कि वह पाठकों पर एक निश्चित प्रभाव छोड़ता है। 4

इन सभी विद्वानों की परिभाषाओं से हमे यह ज्ञात होता है कि कहानी एक छोटी रचना है जो कम समय में पढ़ी जा सकती है। कहानी में किसी भी एक घटना, किसी एक व्यक्ति के जीवन का एक पहलू, ऐतिहासिक किसी भी एक घटना के एक अंश का समावेश होता है। समाज के रीति-रिवाजों, प्रचलित कुप्रथाओं सामाजिक विभीषिकाओं, मानव जीवन के माध्यम तथा आवश्यक तत्वों का निरुपण भी कहानियों में किया जाता है। जिससे भविष्य में होने वाली अमंगलकारी घटनाओं के प्रति लोग जागृत हो जाए और उन परिस्थितयों का सामना करके उनका हल निकाले।

हमारे समाज में यह प्राचीन काल से प्रचलित है कि बच्चा जब थोड़ा बड़ा होता है तो सबसे पहले वह अपने माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी, चाचा-चाची या अपने बड़े भाई-बहन, पड़ोसियों से भी कहानी सुनाने की जिद करता है। कहानी सुनने पर ही उसे नींद आती है। पहले तो राजा-रानी की कहानियॉ होती थी लेकिन बाद में समय के बदलने पर परियों की कहानी, स्पाईडर मैन की कहानी, सिंह, बाघ आदि की कहानियॉ बच्चे सुनना पसंद करते हैं। बच्चों के लिए कहानी संग्रह तथा पत्र-पत्रिकाओं में कहानियॉ छपने लगी हैं।

आज भी प्राचीन समय की कहानियॉ उपलब्ध हैं, जैसे कि पंचतंत्र, हितोपदेश कथासरितसागर, सिंहासन बत्तीसी, बैताल की कथाएं, बौद्ध-जातक कथाएं तथा रामायण महाभारत तथा अन्य पुराणों में सहस्राधिक कहानियॉ आज भी उपलब्ध होती हैं। " परन्तु यहॉ इस तथ्य को गौरतलब करना होगा कि उपर्युक्त कहानियों में तथा जिसे आज कहानी कहा जाता है उनमें विषय-वस्तु एवं रचना की दृष्टि से तात्विक अन्तर पाया जाता है। प्राचीन कथा स्थूल कथा-वस्तु प्रधान, मनोरंजन प्रधान, बोध प्रधान तथा कथा सूत्रों (Story-Motif) पर आधारित होती थी, जबकि आधुनिक कहानी सूक्ष्म चरित्र- चित्रण प्रधान, परिवेश प्रधान तथा जीवन के प्राण-प्रश्नों से संयुक्त होती है। हमारा समसामयिक जीवन ही आधुनिक कहानी की पृष्ठभूमि को तैयार करता है।''5 गंगाप्रसाद पाण्डेय का कहना है कि " कहानी में इस बात का पूरा ध्यान रखा जाता है कि जिस प्रकार भावना ही जीवन नहीं है, कल्पना ही वास्तविकता नहीं

है, उसी प्रकार कठोर सत्य ही एक मात्र सत्ता नहीं है, चिन्तन ही अस्तित्व नही है। समष्टि रूप से भावना तथा चिन्तन का संयोजन कल्पना एवं सत्य का संश्लेषण और इन दोनों तत्वों से समाश्रित तथा सुसम्बन्धित चेतना का नाम मानव जीवन है। कहानी इसी जीवन की इकाई है। सम्भवत: कहानी को जीवन के भावात्मक तथा विचारात्मक दोनों छोरों को छूते हुए चलना पड़ता है।''6 कहानी में जब तक भाव से कर्म का योग नहीं होता तब तक वह अपनी सार्थकता की सीमा में प्रवेश नहीं कर पाती। कहानीकारों को जीवन तथा जगत के प्रति सदैव एक संवेदनात्मक दृष्टिकोण रखना आवश्यक हो जाता है।

प्राचीन युग में भी कहानियों का स्वरूप मिलता था, पर वह आधुनिक युग से काफी अलग था, परन्तु जिसे हम आज की कहानी, कथा या आख्यान कहते हैं, वह आधुनिक काल के नवजागरण की देन है। नवजागरण के कारण हिन्दी साहित्य में गद्य विधा का प्रारम्भ हुआ तथा पत्र-पत्रिकाओं का विकास हुआ। नवजागरण काल के पश्चात भारतेन्दु युग की कहानियों के नाम पर कतिपय कहानी संग्रह उपलब्ध होते हैं।

" जिनमें मुंशी नवलकिशोर शर्मा द्वारा संपादित ' मनोहर कहानी' सन् 1880, राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द कृत 'वामा मनोरंजन' सन् 1868 में, चण्डीप्रसाद कृत 'हास्यरत्न' आदि मुख्य कहानियॉ हैं। मनोहर कहानी में कुल 100 कहानियॉ संकलित हैं । इन कहानी संग्रहों में संकलित कहानियों को लिखकर या किसी अन्य से लिखवाकर प्रकाशित करवाया है उस समय कहानी के नाम पर कुछ स्वप्न कथाएं भी मिलती हैं, हरिश्चन्द्र और बालकृष्ण भट्ट की स्वप्न कथाएं और निबन्ध की सीमाओं को स्पर्श करती हुई दृष्टिगोचर होती है। 7 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपनी पुस्तक हिन्दी साहित्य के इतिहास में लिखा है कि "अंग्रेजी की मासिक पत्रिकाओं में जैसी छोटी-छोटी आख्यायिकाएं या कहानियॉ निकला करती हैं वैसी कहानियों की रचना 'गल्प' के नाम से बंगभाषा में चल पड़ी थी। ये कहानियॉ जीवन के बड़े मार्मिक और भावव्यंजक खंडचित्रों के रूप में होती थी। द्वितीय उत्थान की सारी प्रवृत्तियों का आभास लेकर प्रकट होने वाली "सरस्वती'' पत्रिका में इस प्रकार की छोटी कहानियों के दर्शन होने लगे। 8

" भारतेन्दु युग में कहानियॉ नहीं लिखी गईं। कुछ कथात्मक शैली के निबन्ध अवश्य लिखे गये थे, जो पढ़ने में अत्यन्त रोचक थे। कहानियों का विकास तो आलोच्य युग में ही हुआ। 'सरस्वती' (1900) पत्रिका के प्रकाशन के साथ ही हिन्दी कहानी का जन्म मान्य है। आरम्भ में लिखी गई कहानियों में कुछ शेक्सपियर के नाटकों के आधार पर, कुछ संस्कृत नाटकों के आधार पर, कुछ

बंगला कहानियों को रूपान्तरित करके, कुछ लोककथाआ से प्रेरणा लेकर और कुछ जीवन की वास्तविक घटनाओं को दृष्टि में रखकर प्रस्तुत की गईं। आरम्भिक कथा लेखको में किशोरीलाल गोस्वामी, माधव प्रसाद मिश्र, बंगमहिला, रामचन्द्र शुक्ल, जयशंकर प्रसाद, वृन्दावनलाल वर्मा आदि उल्लेखनीय हैं। 9 हिन्दी के कहानी साहित्य में किसने सबसे पहले कहानी की रचना की यह कहना बहुत कठिन है। लेकिन इतना हम असंदिग्ध रूप से कह सकते हैं कि कहानी विधा के उद्‌भव एवं विकास में 'सरस्वती' पत्रिका का बहुत बड़ा योगदान है। इसी पत्रिका में कहानियों का प्रकाशन हुआ था। इसलिए कहानियों का आरम्भ कहॉ से मानना चाहिए, यह देखने के लिए 'सरस्वती' पत्रिका का सहारा लेना पड़ेगा। 'सरस्वती' में प्रकाशित कुछ मौलिक कहानियों के नाम वर्षक्रम इस प्रकार है

कहानी का नाम	**कहानीकार**	**प्रकाशन वर्ष**
1- रानी केतकी की कहानी	इंशा अल्ला खॅा	1810
2- एक टोकरी भर मिट्टी	माधवच राव सप्रे	1910
3- ग्राम	जयशंकर प्रसाद	1911
4- कानों में कंगना	राधिका रमण सिंह	1913
5- रक्षा बंधन	कौशिक	1913
6- पंचपरमेश्वर	प्रेमचन्द	1916
7- इंदुमती	किशोरीलाल गोस्वामी	1947
8- ग्यारह वर्ष का समय	रामचन्द्र शुक्ल	1960
9- दुलाईवाली	बंगमहिला	1964
10- उसने कहा था	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	1915
11- राजा भोज का सपना	राजा शिवप्रसाद सिंह	---

इनमें से यदि मार्मिकता की दृष्टि से भावप्रधान कहानियों को चुने तो तीन कहानियॉ मिलती हैं।

इंदुमती, ग्यारह वर्ष का समय और दुलाईवाली। यदि इंदुमती किसी बंगला कहानी की छाया नहीं है तो हिन्दी की यही पहली मौलिक कहानी ठहरती है इसके उपरान्त ' ग्यारह वर्ष का समय' फिर 'दुलाईवाली' का नंबर आता है।

इस प्रकार कहानी के निम्नलिखित भेद किए जा सकते हैं, जिसका उल्लेख यहॉ किया जा रहा है, किन्तु उसके विस्तार में जाना पृष्ठ-पेषण मात्र ही होगा।

कहानी के भेद

विषय वस्तु के आधार पर

1. घटना प्रधान
2. पात्र प्रधान
3. विचार-प्रधान
4. भाव- प्रधान
5. कल्पना प्रधान
6. हास्य प्रधान
7. काव्यात्मक
8. प्रतीकात्मक

प्रतिपादन शैली के आधार पर

1. उत्तम पुरुष प्रधान
2. अन्य पुरुष प्रधान
3. पत्र पद्धति में लिखित
4. वार्तालाप पद्धति में लिखित
5. डायरी पद्धति में लिखित

विषय के आधार पर

1. धार्मिक कहानी
2. राजनीतिक कहानी
3. ऐतिहासिक कहानी
4. वैज्ञानिक कहानी
5. सामाजिक कहानी

रचना लक्ष्य के आधार पर

1. आदर्शवादी कहानी
2. यथार्थवादी कहानी
3. आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी कहानी

स्वरूप-विकास के आधार पर

1. निर्माणकालीन कहानी
2. प्रयोगकालीन कहानी
3. विकासकालीन कहानी
4. समुन्नति (उत्कर्ष) कालीन कहानी

2 - स्वाधीनता आन्दोलन और प्रेमचन्द

परिवर्तन और भारत का चोली दामन का साथ है और इसकी शुरुआत आर्यों से होती है। भारत में सबसे पहले आर्य आए। उनके शासनकाल में भारतीय प्रजा धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक रूप से बड़ी समृद्ध थी। ई.स. छठीं शताब्दी में ही भारतवर्ष में धार्मिक, राजकीय, सामाजिक परिवर्तन हो रहा था। इसवी सन् के प्रारम्भिक काल में ही भारत में तुर्कों का आक्रमण और बाद में भारतवर्ष में सांमतशाही की शुरुआत हो गई। लेकिन कुछ वर्षों बाद मुगलों के आक्रमण शुरू हो गये आखिर में 16 वीं शताब्दी में बाबर ने भारत पर अपनी हुकूमत जमा दी। उसके बाद कई मुगल आए और भारत को लूटकर चले गये । तब भारत में धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक रूप से अंधकार फैल गया था। राजनैतिक पराधीनता ने भारतीय प्रजा की रीढ़ की हड्डी तोड़ डाली थी। भारतवासी दुर्बलता, दरिद्रता, हीन भावना तथा अन्य विकारों से ग्रस्त हो गये थे। मुगल भारत में लुटेरे बनकर आए लेकिन लुटेरे से शासक बने और फिर यहीं के होकर रह गये। जब इग्लैंड की ईस्ट इण्डिया कंपनी भारत में व्यापार के उद्देश्य से आई, उस समय मुगल सम्राट पूर्ण अर्थो में सम्राट थे। अत: यहॉ की राजनीति में अंग्रेजों का कोई हाथ नहीं था। " लन्दन के जिन व्यापारियों ने सन् 1600 ई. में महारानी एलिजाबेथ से भारत में व्यापार करने की अनुमति मॉगी, उन्होंने स्वप्न में भी यह न सोचा था कि वे भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव डाल रहे थे। क्रमश: ईस्ट इंडिया कंपनी की शक्ति बढ़ती गई। सूरत, आगरा, अहमदावाद तथा ब्रोच में फैक्टरियॉ स्थापित हो गई। बम्बई चार्ल्स द्वितीय को विवाह में दहेज के रूप में मिला जो कंपनी को दे दिया गया। 1661 से 1683 ई. के बीच चार्ल्स द्वितीय से कंपनी को 5 चार्टर प्राप्त हुए, जिनसे कंपनी व्यापारिक संस्था से भौमिक शक्ति बन गई। कंपनी को कालान्तर में सेना संचालन, युद्ध और संधि करने तथा सिक्के बनाने का अधिकार भी मिल गया। नवीन नीति में कंपनी का ध्येय व्यापारिक उन्नति के साथ - साथ माल गुजारी बढ़ाना भी हो गया। प्रारम्भ में नील, चीनी, लाख, सूत तथा सूती कपडों का व्यापार मुख्यत: होता था। धीरे-धीरे रेशम, रेशमी कपड़ों, मसालों, मलबार की मिर्चों आदि का भी व्यापार होने लगा। अंग्रेजों का उद्देश्य भारत के शासन और व्यापार दोनों को हस्तगत करना था। शासन - सूत्र ब्रिटेन के राजा के हाथ में चले जाने के बाद भी शासकों ने भारत से होने वाले व्यापारिक लाभ पर विशेष रूप से दृष्टि रखी। इसी का फल यह हुआ कि ब्रिटिश शासन में होने वाली देश की आर्थिक अवनति, उद्योग-धंधों और कला कौशल के विनाश आदि की ओर प्रारम्भिक राजनीतिकों का बहुत ध्यान गया और कांग्रेस में इस संबंध में निरन्तर प्रस्ताव पास हुए थे।'' 10

मुगलों को तो भारतवासियों ने आत्मसात कर लिया पर 23 जून 1757 ई. में प्लासी के युद्ध में मीर जाकर के सामन्ती विश्वासघात के कारण अंग्रेजों की विजय हुई और उन्होंने उत्तर भारत में अपनी स्थिति दृढ़ कर ली। 1764 ई. के बक्सर के युद्ध ने रहा सहा काम पूरा कर दिया और अंग्रेजों ने भारत में पैर जमा दिए। " विलियम बोल्टस ने 1772 ई. में लिखा कि अंग्रेज अपने निश्चित किए हुए मूल्य पर कारीगरों को अपना सामान बेचने पर विवश करते हैं। कंपनी के गुमाश्ते जिस पत्र पर चाहते हैं, कारीगरों से हस्ताक्षर करा लेते है। इस सबका परिणाम यह हुआ कि भारत के कारीगरों ने अपने-अपने उद्योग-धन्धे छोड़ दिए। 1813 ई. में भारतवर्ष के बुने हुए कपड़ों का व्यापार 70 तथा 80 प्रतिशत चुंगी लगाकर नष्ट कर दिया गया। 1765 ई. में बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा की दीवानी के अधिकार कंपनी को मिल गये। भूमि कर बराबर बढ़ता गया। 1770 ई. में बंगाल में भयानक अकाल पड़ा। लगभग एक तिहाई जनसंख्या समाप्त हो गई परन्तु भूमिकर में फिर वृद्धि हुई। इस बीच कृषि की उन्नति करने की ओर ध्यान नहीं दिया गया।'' 11

यह आर्थिक शोषण 1857 के संग्राम होने का एक महत्वपूर्ण कारण है। इसके अलावा उस काल में कई युद्ध हुए, जैसे

प्रथम तथा द्वितीय वर्मा युद्ध -- 1826 ई.- 1852 ई.

तृतीय मराठा युद्ध -- 1817 ई.

प्रथम तथा द्वितीय सिक्ख युद्ध -- 1845 - 1846 ई., 1848 - 1849 ई.

पिंडारी युद्ध -- 1817 ई.

उपर्युक्त युद्ध इसी काल में हुए। इन युद्धों ने भी देश की आर्थिक दशा पर प्रभाव डाला। डलहौजी की स्वतंत्र व्यापार की नीति से भी भारत की अर्थव्यवस्था को आघात पहुंचा। 1857 ई. के सशस्त्र विद्रोह में तो आर्थिक कारण प्रधान रहा ही, आगे आने वाले राष्ट्रीय आन्दोलन में भी राजनीतिज्ञों की दृष्टि आर्थिक कष्ट दूर करने की ओर विशेष रही।'' 12

अंग्रेजो के राज्य में पैर जमने के बाद से ही सिपाहियों में छोटे बड़े विद्रोह होते रहते थे। पर उसे अंग्रेज ले- देकर या कठोर दमन से दबा देते थे। उसी समय से 1857 के संग्राम के बीज बोए जा रहे थे। 1857 के संग्राम होने के कुछ मुख्य कारण इस प्रकार हैं---

1) डलहौजी की युद्धनीति, ' डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स' की कुनीति तथा कुशासन के द्वारा राज्य बढ़ाने की अग्रनीति की वजह से सर्वत्र लोगों में आतंक छा गया था।

2) 1813 ई. के एक्ट के अनुसार एक लाख रूपये वार्षिक शिक्षा पर व्यय करने का निश्चय हुआ। अंग्रेजों ने यह पैसा भारतीय भाषाओं की शिक्षा पर न लगाकर उनको अंग्रेजी नौकर यानी की क्लार्क की जरूरतों की पूर्ति में लगाया। यानी कि हिन्दुस्तानी व्यक्ति को अंग्रेजी शिक्षा देना तय किया पर वह शिक्षा उतनी ही देते जिससे उनको क्लार्क मिल सके। क्लार्क भी जो हो हिन्दुस्तानी लेकिन उसका रहन -सहन, खान-पान तथा बात-चीत का तरीका अंग्रेजी हो। जिससे वह पूरा मानसिक रूप से अंग्रेज बन जाय और अंग्रेजों का वफादार नौकर बन कर रहे। इससे अंग्रेजों के दो फायदे थे, एक तो उनको सस्ते और अच्छे क्लार्क मिल जाते थे और दूसरे वे मानसिक रूप से अंग्रेज बन जाने के बाद वे विदेशी चीज-वस्तुओं को भी ज्यादा पसंद करते। उन्होंने जैसा चाहा वैसा हुआ भी। स्वदेशी माल कम बिकने लगा तथा विदेशी माल की खपत ज्यादा होने लगी।

3) बहुत राज्यों के ब्रिटिश समाज्य में मिल जाने के कारण तथा भारतीय माल विदेश में ज्यादा बिकने के कारण वहॉं की सरकार ने अपने माल की बिक्री के लिए भारतीय माल पर ज्यादा कर लगा दिया, जिसकी वजह से भारतीय अधिकारी अपनी अधिकारिता एवं जीविका से हाथ धो बैठे, यद्यपि वे कुशल एवं चतुर थे।

4) हिन्दू तथा मुसलमान दोनों के दिलों में इस संदेह ने घर कर लिया था कि अंग्रेज उनके प्राचीन रीति-रिवाजो को तोड़कर उन्हें इसाई बनाना चाहते हैं।

5) गदर का सबसे महत्वपूर्ण सैनिक कारण यह था कि अंग्रेज सरकार ने एक नई राईफल निकाली थी। जिसमें कारतूस निकालने के पहले उसे मुॅंह से खोलना पड़ता था और उस कारतूस पर चढ़ी चर्बी कतिपय उदाहरणों में गायों व सुअरों की थी, जो हिन्दू व मुसलमान दोनों के लिए धर्मभ्रष्ट था, इसलिए सैनिक कुपित ज्यादा हुए।

इन्हीं सभी कारणों की वजह से 1857 का संग्राम हुआ। संग्राम के प्रतीक रूप में बड़े रहस्यात्मक ढंग से छावनियों में रोटियों व कमल के फूल घुमाए गये। फकीरों और साधुओं ने भी प्रत्येक छावनी में क्रान्ति की आग सुलगा दी। गॉव हो या शहर वहॉं के सभी लोग क्रांति में जुड़ गये और अंग्रेजों के खिलाफ हो गये। क्रान्ति का दिन 31 मई 1857 ई. को निश्चित किया गया था। इसके निम्नलिखित कारण इस प्रकार है

1) "क्रान्ति का निश्चित दिन 31 मई 1857 ई. था परन्तु बैरकपुर तथा मेरठ की छावनियों में क्रान्ति का विस्फोट इस तिथि से पूर्व ही हो गया।''13

2) हिन्दी भाषी प्रदेशों को छोड़कर अन्य प्रदेश जैसे कि हैदराबाद, ग्वालियर, नाभा, पटियाला, जिंद, राजपूताना, बड़ौदा की रियासतों ने अंग्रेजों का साथ दिया।

3) हमारे पास आयोजन, सर्वसामान्य नेतृत्व एवं आधुनिक हथियारों की कमी थी जबकि अंग्रेजों के पास यह सब कुछ था।

4) क्रिमिनियम युद्ध जीतकर वापिस जाने वाली ब्रिटिश फौज को भारत बुलाया गया, जिससे अंग्रेजों के पास ज्यादा फौज हो गई थी।

इस आन्दोलन का प्रथम प्रभाव भविष्य की क्रान्ति पर खूब पड़ा और यह तय किया गया कि अब सशस्त्र क्रान्ति न करके निशस्त्र क्रान्ति करेंगे। तथा क्रान्ति करने के पहले से देश के सभी राज्यों के समुदायों को एक जुट करके क्रान्ति करेंगे और आगे चलकर ऐसा ही हुआ।

"1857 ई. की महान क्रान्ति के बाद भारत का शासन कंपनी के हाथ से चले जाने के बाद ब्रिटेन के राजा के हाथ में आ गया। 1 नवम्बर- 1858 ई. को लार्ड कैनिंग ने दरबार किया जिसमें महारानी विक्टोरिया का घोषणा पत्र पढ़ कर सुनाया गया। इस घोषणा पत्र में यह कहा गया कि भारतीय प्रजा के धर्म-विश्वासों में कोई हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा। भारत के परम्परागत रीति-रिवाजों को आदर की दृष्टि से देखा जायेगा। उद्योंगों को प्रोत्साहन दिया जाएगा तथा प्रजा अपनी जाति, धर्म अथवा वर्ण के कारण किसी पद से वंचित नहीं की जायेगी।''14 लेकिन ये सब सब केवल कहने की बातें थी। भारतीयों को इस घोषणा पत्र से जितनी आशाएं दिए गये बचनों की थी, वह सब चकनाचूर हो गई। 1857 के संग्राम के बाद भारत में अकाल ही अकाल पड़ा। ये अकाल उद्योग-धंधा खत्म होने से हुआ। भारत के गृह उद्योगों को जिस तरह अंग्रेजों ने नष्ट कर दिया था उसकी वजह से लोग दाने-दाने के लिए तरसने लगे। भारतीयों को विदेशियों का माल खरीदना पड़ा, क्योंकि स्वदेशी माल पर अंग्रेजों ने ज्यादा कर लगाकर महँगा बना दिया था। गृह उद्योग बन्द करवा दिया गया जिसके परिणाम स्वरूप 1905 ई. के बाद विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार शुरू हो गया। तथा अकाल पड़ने पर भी लगान कम करने के बजाय उसे बढ़ा दिया । भारतीय प्रजा जो कृषि पर निर्भर थी, उस कृषि की वृद्धि के कोई कार्य न किया गया।, जिसकी वजह से लोग बेघर हो गये। अंग्रेजो ने अपने घोषणापत्र का एक भी वादा पूरा न किया। 1857 के बाद भारत में एक महत्वपूर्ण कार्य था वह था भारतीय समाज की कुरीतियो को दूर करना। नवजागरण के कारण भारत के कुछ अग्रणी नेताओं ने कुछ संस्थानों की स्थापना की। जिसमें सती प्रथा, बाल-विवाह, बालकी को दूध पीती करने का रीवाज, विधवा विवाह,

दहेज प्रथा, अनमेल-विवाह, छुआ-छूत, तंत्र-मंत्र, भूत-प्रेत, बहु-पत्नी प्रथा, शिक्षा के प्रति जागरूकता लाना आदि अनेक कार्य किए गये । इन संस्थानों के नाम इस प्रकार हैं

आर्य समाज- स्थाापना - 10 अप्रैल, 1857 ई. में दयानंद सरस्वती ने बम्बई में की।

ब्रह्मसमाज- स्थापना राजाराममोहन राय ने 1828 में की।

प्रार्थना समाज- स्थापना केशवचंद्र सेन ने मार्च 1867 ई. में की।

थियोसॉफिकल सोसायटी - स्थापना मैडम ब्लावत्सकी तथा कर्नल आलकाट ने मिलकर संयुक्त राष्ट्र ने 1857 में की।

अधयाय 1 के प्रारम्भ में इसकी विस्तार से चर्चा की गई है।

साहित्य समाज का दर्पण है। इसलिए समाज में जो कुछ चल रहा होता है उसकी साहित्य में झॉकी मिलना आवश्यक है और साहित्य ही एक ऐसा माध्यम है जो लोगों को सही राह दिखा सकता है । 1857 की क्रान्ति के बाद तो लोगों को सही रूप से सत्य का ज्ञान कराने के लिए देशभक्ति का जोश जगाने के लिए साहित्य का एक महत्वपूर्ण योगदान है। 1857 के पहले का साहित्य हो या 1857 के संग्राम के बाद का हर जगह अंग्रेजो को अच्छा नहीं माना गया था। 1857 के पहले नामचीन कवि थे जिन्होंने अंग्रेजो की अवहेलना अपने पदों व दोहों के द्वारा की है जैसे कि महाकवि भूषण, पदमाकर, बाबा दीनदयाल गिरि आदि। इस समय के लोग रूढ़िगत परंपराओं के आदी थे। उनकी सोच कुएं के मेढक के समान थी और वे उसे ही अपना भाग्य मानते थे। पर 1857 के संग्राम के बाद लोगों में नवजागरण हुआ उन्हें सही और गलत का फर्क समझ में आने लगा। समाज की रूढ़िगत परंपराएं जो बेबुनियादी थी उसका खंडन होने लगा। स्वतंत्रता के लिए लोगों में उत्साह बढ़ाने की शुरुआत तो हो चुकी थी लेकिन उसे और वेग में बढ़ाने का कार्य साहित्य ने किया। "1857 से भारतीय जीवन में जो एक महान परिवर्तन, एक क्रान्ति, एक युगान्तर आया, वह समस्त भारतीय साहित्य में प्रतिफलित हुआ। गुजराती साहित्य में नर्मद, मराठी साहित्य में चिपलुनकर, बंगला साहित्य में बंकिमचन्द्र और हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु इस क्रान्ति और युगान्तर की मुख्य बात यही है कि ' नरेश युग 'समाप्त हुआ और 'जनयुग' आरम्भ हुआ।'' 15

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र इस युग के प्रवक्ता थे और उनकी ' भारत दुर्दशा ' इस युग की सबसे प्रतिनिधि रचना थी क्योंकि ' भारत दुर्दशा ' नवीन युगीन धारा को लेकर चलती थी। भारतेन्दु के बाद भी कई लेखक आए जैसे रामचन्द्र शुक्ल, श्यामसुन्दरदास जी, पं. बालकृष्ण भट्ट , प्रतापनारायण मिश्र, श्री राधा चरण गोस्वामी, श्री किशोरी लाल आदि। उन्होंने भी नवजागरण पर

आधारित रचनाएँ की। प्रेमचन्द ने साहित्य में लगभग इसी समय प्रवेश किया जब राजनीति में गॉधीजी ने प्रवेश किया। प्रेमचन्द को आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कथाकार, गांधीवादी समाजसुधारक आदि कहकर यही प्रकट किया जाता है कि वे गांधीवाद से प्रभावित हैं और उसके सिद्धान्तो के अनुसार साहित्य रचना करने वाले कथाकर थे। डॉ. जगतनारायण हैकरवाला का मानना है कि - " प्रेमचन्द उस समय उत्पन्न हुए थे जब भारत में एक महान परिवर्तन हो रहा था। वे जब पैदा हुए थे जब हमारा देश कुछ प्रगतिशील और कुछ प्रतिक्रियावादी प्रभावों में जकड़ा हुआ था। उनका जीवनकाल भारत के इतिहास में एक राजनीतिक क्रांति और सामाजिक तथा धार्मिक उथल-पुथल का युग था। इसका प्रभाव उन पर निश्चय ही पड़ा। साहित्यकार बहुधा अपने देशकाल से प्रभावित होता है। जब कोई लहर देश में उठती है, तो साहित्यकार के लिए उससे अविचलित रहना असंभव हो जाता है और उसकी विशाल आत्मा अपने देश- बंधुओं के कष्टो से विकल हो उठती है एवं इस तीव्र विकलता में वह रो उठती है, पर उसके रुदन में भी व्यापकता होती है। वह स्वदेश का होकर भी सार्वभौमिक रहता है।'' 16

प्रेमचन्द के ऊपर गांधीजी का प्रभाव तो पड़ा था लेकिन उसके अलावा भी कई आन्दोलनों एवं व्यक्तियों का प्रभाव भी उन पर पड़ा जो निम्नलिखित है--

1) " प्रेमचन्द पर अधिक महत्वपूर्ण प्रभावों में आर्य समाज के आन्दोलन का प्रभाव विशेष ज्ञात होता है। आर्य समाज आन्दोलन हिन्दू सुधारवादी आन्दोलन है जिसको स्वामी दयानन्द सरस्वती नें सन् 1857 में प्रारम्भ किया था। इस आन्दोलन का लक्ष्य हिन्दू धर्म का सुधार करना और उसके प्राचीन रूप की पुर्नप्रतिष्ठा ही उनके उपदेशों का मूल उद्देश्य था। उनका विचार था कि वेद अद्वैतवाद की शिक्षा देते हैं। उन्होंने मूर्तिपूजा का खण्डन किया है। उन्होंने गाय की पवित्रता की भी घोषणा की थी जो वैदिक सिद्धान्त नही है। उन्होंने घोषित किया कि जाति जन्म पर नहीं कर्म पर आधारित है और कोई भी व्यक्ति, जो वेदों का अध्ययन करता है और उनके उपदेशों के अनुसार चलता है, ब्राह्मण हो सकता है। '' 17

प्रेमचन्द की कृतियों पर इनका प्रभाव हमें देखने को मिलता है जैसे ' गोदान'

2) दिसम्बर 1910 इलाहाबाद में जो 'नेशनल सोश्यल कान्फ्रेंस' हुई थी उसमें प्रेमचन्द ने भाग लिया था। उस कान्फ्रेंस के कुछ मुख्य ध्येय इस प्रकार थे --

***** " स्त्रियों की शिक्षा की उन्नति की जाय।

* यह कान्फ्रेंस बहुत बल देकर इस बात की सिफारिश करती है कि माता-पिता को इस बात से सहमत कराने का प्रत्येक सम्भव प्रयत्न किया जाय कि वे अपने पुत्रों का विवाह 25 वर्ष और पुत्रियों का विवाह 16 वर्ष की अवस्था से पूर्व न करें।

* इस कान्फ्रेंस का यह मत है कि अब समय आ गया है हि पर्दा प्रथा को समाप्त करने का कदम उठाया जाना चाहिए।

* दलित वर्गों की नैतिक, भौतिक और सामाजिक अवस्था को ऊँचा उठाया जाय।

* नवयुवती विधवाओं की दयनीय स्थिति का सुधार हो। प्रत्येक प्रान्त में नये विधवाश्रम खोलकर अथवा उनकी स्थिति दृढ़ करके विधवाओं को औद्योगिक शिक्षा देकर और जो पुनर्विवाह करना चाहती हैं उन्हें बेरोक-टोक ऐसा करने की सामाजिक अनुमति होनी चाहिए।

* विदेशी भारतीयों के पुर्नप्रवेश पर लगे हुए सभी प्रतिबन्ध हटा दिए जाए। '' 18

प्रेमचन्द की कहानियों में हमें इन सबका सजीव चित्र दिखाई देता है।

3) प्रेमचन्द के विचारों पर धार्मिक ग्रंथो जैसे कि पवित्र कुरान, श्रीमदभगवत्गीता तथा कर्बला की दुखद घटनाओं का भी प्रभाव पड़ा है।

4) प्रेमचन्द पर ब्रह्मसमाज तथा सनातन धर्म के विचारों का भी खूब प्रभाव पड़ा है। विशेषकर ब्रह्मसमाज से उन्होंने ये आत्मसात किया कि स्त्रियॉ भी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष पथ पर अग्रसर होती है और कहीं-कहीं तो वे पुरुषों से आगे निकल जाती है।

5) धार्मिक आन्दोलनों के अलावा राजनीतिक आन्दोलनों का भी प्रेमचन्द पर खूब प्रभाव देखा जाता है। जिसमें 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' जिसकी रचना एलन ओक्टावियन ह्यूम द्वारा 1885 में हुई और वह प्रेमचन्द के हम उम्र की थी। उनके हर एक ध्येय व आन्दोलन में प्रेमचन्द ने सहयोग दिया और उसके आधारित साहित्य की भी रचना की।

6) प्रेमचन्द के ऊपर बालगंगाधर तिलक के घोषणा पत्र का प्रभाव पड़ा था। बालगंगाधर तिलक के घोषणा पत्र में काफी चीजे हैं, लेकिन यहॉ उन बातों को लिया गया है जिनका प्रभाव प्रेमचन्द पर मुख्यत: पड़ा था वे निम्न हैं

साम्राज्य शीर्षक के अन्तर्गत निम्नलिखित धाराएं थी।

2 – श्रमिक, कृषक और उद्योगी वर्गों के लिए उनके श्रम के फल के एक उचित भाग की सुरक्षा निम्नतम वेतन, पूँजी और श्रम के समान आधार पर संबंध हो इस कार्य के लिए उपयुक्त संगठन को बढ़ावा देना।

5 - रेलों का राष्ट्रीयकरण और विधान निर्माण द्वारा रेल चुंगी को नियमित करना जिससे औद्योगिक विकास को सहायता मिले और उनकी कार्य प्रणाली में विद्यमान सुविधाएं देने और पक्षपात करने की भावना का उन्मूलन हो।

9 - राष्ट्रीय एकता को ऐसे साधनों द्वारा बढ़ावा देना जैसे सम्पूर्ण भारत के लिए एक राष्ट्रभाषा की स्थापना और विभिन्न धार्मिक मतावलम्बियों विशेषकर हिन्दू- मुसलमानों के संबंधों को सुधारना।

10 - भाषा के आधार पर प्रान्तों का पुर्नगठन।

प्रान्तीय ' शीर्षक के अन्तर्गत निम्नलिखित धाराएं हैं

4 - बैठ, बेगार और सर्वराई का पूर्ण रूप से निषेध।

5 - देश भाषा के माध्यम से जहॉ तक सम्भव हो सके, ऊॅची शिक्षा दी जाय।

7 -शासन और न्याय संबंधी अधिकारों सहित गॉव और न्याय पंचायतों की पुर्नस्थापना।'' 19

यही सब चीजें हैं कि जिन्होंने प्रेमचन्द को इस प्रकार की समस्याओं से आधारित उपन्यासों और कहानियॉ लिखने की प्रेरणा दी। अगर प्रेमचन्द ने इन विषयों पर अपनी कृतियों का सृजन न किया होता तो वे कभी महान उपन्यासकार या कहानीकार न बन पाये होते। प्रेमचन्द की शैली इस तरह की है अगर वे उस युग में विद्यमान तथ्यों एवं गतिविधियों को अपनी लेखनी में नहीं लेते तो वे रोमांटिक लेखक के अलावा कुछ न बन पाते। उनके विस्तृत एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से लिखने के कारण ही आज उनका नाम अमर है तथा उनके नाम पर एक युग की स्थापना भी की गई है। प्रेमचन्द एक अत्यधिक पढ़ने वाले असाधरण पाठक थे। वे प्रगतिवादी लेखकों की रचनाओं को पढ़ना ज्यादा पसंद करते थे। इसलिए उन्होंने थोरो, रोम्यांरोलां, विक्टर, ह्यूंगो, टाल्सटाय, मैल्सिम गोर्की, माइकेल, शोलो खोब, गाल्सवर्दी, अनातेले फ्रांसे और जार्ज बर्नार्ड जैसे लेखकों के पुस्तको का चयन किया और इन लेखकों ने प्रेमचन्द के वाचन की भूख को तृप्त किया। प्रेमचन्द के लेखों में इनका प्रभाव हमे देखने को मिलता है। इस प्रकार स्वाधीनता आंदोलन में प्रेमचन्द की अहम् भूमिका रही है, उनकी रचनाएॅ इसका गवाह हैं।

" प्रेमचन्द का साहित्य भारत के राष्ट्रीय नवजागरण का साहित्य है। प्रेमचंद के युग में भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन ने अनेक मोड़ लिए। रजनीपाम दत्त के अनुसार भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन तीन प्रतिभाशाली लहरों के रूप में प्रकट होता है। पहली लहर 1905-10 तक रही जबकि नरमदली नेतृत्व की सत्ता हटी और निम्नवर्गो की जनता संघर्षों में कूदी। इसी दौर में लोकमान्य तिलक की गिरफ्तारी पर सन् 1908 में बम्बई के मजदूरों की व्यापक हड़ताल हुई, जिसका आवाहन लेनिन ने

किया था। दूसरी लहर का काल 1919 से 1922 तक था और तीसरी का 1930-34 तक। राष्ट्रीय आन्दोलन के इस उभार का कारण भारतीय मजदूर और किसान वर्ग की जागृत चेतना थी। यह चेतना साम्राज्यवादी शासन से निर्णयात्मक टक्कर लेने को अधीर थीं। लेकिन राष्ट्रीय कांग्रेस का पूँजीवादी नेतृत्व आन्दोलन को उफान पर पहुँचते ही रोकना चाहता था। प्रेमचन्द के साहित्य में हम किसान और मजदूर वर्गों के तीव्रतम होते हुए संघर्षों की अभिव्यक्ति पाते हैं। साथ ही नेतृत्व के प्रति टूटते हुए भ्रम भी। उग्र होते हुए भारतीय आन्दोलन की राष्ट्रीय चेतना के साथ ही प्रेमचंद के साहित्य में हम समझौतावादी दृष्टि का ह्रास और निर्णयात्मक संघर्षों की ओर बढ़ता हुआ रूझान भी देखते हैं। ''
20

प्रेमचन्द ने अपने कथा साहित्य में भारतीय जीवन के अब तक अछूते रहे सारे पहलुओं को समा लिया है। भारतीय किसान और गॉव भारत की मूल वास्तविकता है, जिसे प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में विस्तार एवं तल्लीनता से हर पहलू को चित्रित किया है। इसके सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं उनके द्वारा रचित रचनाएँ जिसमें प्रेमाश्रम, कर्मभूमि, रंगभूमि तथा गोदान आदि मुख्य हैं। इन रचनाओं में किसान संघर्षों का व्यापक और मर्म र्स्पशी चित्रण हुआ है। प्रेमचन्द के साहित्य में भारतीय जीवन की समृद्धि चित्रशाला मिलती है, जहॉ हम युवा, वृद्ध, नर-नारी, शिशु सभी प्रकार के चित्रण पाते हैं। इनकी जीवन कथा महान लेखक ने रक्त और अश्रु से लिखी है। इसे पढ़ते समय ऐसा लगता है कि इतनी पीड़ा मनुष्य के लिए असहनीय है। और तभी किसी प्रकार भी बर्दाश्त नहीं कर सकता और तभी मानव हृदय में विद्रोह की ज्वाला धधक उठती है।

प्रेमचन्द के साहित्य में हमें छोटे वेतन का मास्टर, खाता-पीता घर, बड़ी होती हुई लड़कियॉ, विवाह और दहेज का प्रश्न, अन्त में मानो लड़की को कुएँ में धकेलना, किसी बूढ़े के गले जो मृत्यु के बिल्कुल करीब हैं उससे लड़की को बॉधना, स्त्री को शादी के काफी समय बाद बड़ी ठोकर खाना। यह बाते उनके साहित्य में देखने को मिलती हैं जो वास्तविकता को इतनी सचोट रूप से प्रदर्शित करती हैं कि पाठक भाव विभोर हो जाता है। तथा भारत की वास्तविकता के दर्शन पाता है। उनकी सेवासदन, निर्मला तथा गबन ऐसी ही रचनाएं है। प्रेमचन्द की कहानियों का क्षेत्र इतना विशद एवं व्यापक है, तदुपरांत उनकी कहानियों के पात्र इतने विविध एवं सच्चे हैं कि कहानियॉ तत्कालीन उत्तरी भारत, विशेषत: हिन्दी भाषी क्षेत्र का प्रतिरूप बन गई है। इतना ही नही आज भी भारत के हर एक क्षेत्र के साहित्य में उनका नाम उल्लेखनीय है। इनके द्वारा लिखे गए कहानी और उपन्यास आज भी पढ़े एवं पढ़ाए जाते है।

प्रेमचंद ने लोकगाथात्मक पुन: जन्म का आभास देने वाली उपदेश परक आदर्शोन्मुख यथार्थवादी, यथार्थवादी, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, नारी-विर्मश आदि कई प्रकार की कहानियॉ लिखी हैं। उन्होनें यथार्थ को सबके सामने रखा है। उनकी कहानियों को आज हम लोगों ने विमर्शगत रूप में बांध दिया है और कहते हैं कि यह दलित विमर्श की कहानी है, यह नारी विमर्श की कहानी है। उनकी कहानियों को देखकर हमें यह आश्चर्य होता है कि एक कहानीकार ने हिन्दी कहानी की सुदीर्घ यात्रा तय की जो उनके पूर्व और बाद के कहानीकार न कर सके। प्रेमचंद ऐसे लेखक हैं जिन्होंने ' कागद लेखी नहीं पर आंखिन देखी लिखा है' प्रेमचंद की प्रारम्भिक अधिकांश कहानियों पर मध्यकालीन प्रकथनात्मकता का गहरा प्रभाव दिखाई पड़ता है। उन्होंने कहानी कहने की कला पश्चिम से नहीं सीखी थी। प्रेमचंद की कहानियों की लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण यह है कि उनकी कहानियॉ के रचना विधान में उनका श्रोता- पाठक निहायत अनन्तराग से घुला- मिला है।

प्रेमचंद का उत्थान आधुनिक भारतीय इतिहास के क्रान्किारी युग में हुआ था। इस समय भारतीय जनता मुक्ति के लिए संघर्ष कर रही थी। तब नये वर्ग इस संघर्ष में कूदे और पुराने नेतृत्व को बेनकाब कर दिया। प्रेमचंद के साहित्य में हमें वही क्रान्ति, संघर्ष के दर्पण होते हैं। इसीलिए हम यह कह सकते हैं कि ' प्रेमचंद आधुनिक युग के सबसे अधिक क्रान्तिकारी लेखक है।

3 - आधुनिकता एवं हिन्दी कहानी और प्रेमचन्द

मानव इतिहास और साहित्य का प्रगाढ़ संबंध है। इतिहास का प्रभाव जिस तरह से राजनीति, समाज, अर्थ और संस्कृति पर पड़ता है उसी तरह साहित्य भी उससे अछूता नहीं रहा है। इसी वजह से आदिकाल, भक्तिकाल, तथा रीतिकाल के साहित्य में हमे उस समय की विविध परिस्थितयों का चित्रण देखने को मिलता है। डॉ. लक्ष्मीलाल वैरागी का मानना है कि --" मानव इतिहास और साहित्य में इतना अन्तर अवश्य है कि मानव में कोई घटना किसी एक समय में घटित हो जाती हे और उसी तिथि से हमयुग परिवर्तन की घोषणा कर देते है, जबकि साहित्य के इतिहास में ऐसा नहीं होता है। साहित्य के इतिहास में आकस्मिक परिवर्तन नहीं होता है। साहित्य के इतिहास में युग परिवर्तन की एक लम्बी पृष्ठभूमि और परम्परा रहती है, जो किसी नियत तिथि से आरम्भ नहीं होती । यही कारण है कि हम साहित्य के किसी युग विशेष का निर्धारण एक निश्चित तिथि से नहीं कर सकते। '' 21

इन्हीं परिस्थितयों के आधार पर विद्वानों ने हिन्दी साहित्य को मुख्य रूप से तीन भागों में विभाजित किया है।

हिन्दी साहित्य का इतिहास

- आदिकाल (1050 से 1700)
- मध्यकाल (1050 से 1900)
  - भक्तिकाल (1375 से1700)
  - रीतिकाल (1700 से1900)
- आधुनिककाल (1900 से अब तक)
  - गद्य
    - नाटक
      - भारतेन्दु युग
      - प्रसाद युग
      - प्रसादोत्तर युग
    - कहानी/उपन्यास
      - पूर्व प्रेमचंद युग
      - प्रेमचन्द युग
      - प्रेमचन्दोत्तर युग
  - पद्य
    - कविता
      - द्विवेदी युग
      - छायावाद युग
      - रहस्यवाद युग
      - प्रगतिवाद युग
      - प्रयोगवाद युग
      - अकविता
      - गद्य कविता

इस काल विभाजन से हमारा मुख्य उद्देश्य आधुनिककाल का है, इसी वजह से हम आधुनिक काल की चर्चा करेगें। हिन्दी साहित्य में आधुनिककाल के प्रादुर्भाव से बहुत पूर्व ही उसकी पृष्ठभूमि बनना आरम्भ हो गई थी। सबसे पहले हम इस काल का नाम आधुनिककाल क्यों रखा गया है उसकी चर्चा करेगें। आधुनिक शब्द से आशय वर्तमानकाल से होता है यानी वर्तमान में जो साहित्य चल रहा होता है वही आधुनिक साहित्य है। हम 10-20 वर्षों की परिधि में लिखे गये साहित्य को भी आधुनिक साहित्य कह सकते हैं। परन्तु हिन्दी साहित्य के ख्यातिप्राप्ति साहित्यकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आधुनिककाल का आरंभ सन् 1843(सन् 1900) से निर्धारित किया। जिसमें थोड़ा बहुत बदलाव करके अन्य विद्वानों ने अपने अपने ढंग से इस काल के समय का निर्धारण किया है। अर्थात् आज से 125 से 150 वर्ष पूर्व लिखे गये साहित्य को हम आधुनिक साहित्य कह सकते है। इसका उत्तर देते हुए डॉ. लक्ष्मीलाल वैरागी कहते हैं कि " वस्तुत: आधुनिक शब्द दो अर्थो में प्रयुक्त हुआ है प्रथम मध्यकाल से भिन्न और द्वितीय इहलौकिक दृष्टिकोण से युक्त। मध्यकालीन साहित्य भक्ति और रीतिकाव्य एक परंपरा में बंधकर रह गई थी। भक्तिकालीन काव्य में केवल भक्ति और उपासना की प्रधानता थी। लोकजीवन का चित्रण गौण था। इसी प्रकार रीतिकालीन कविता भी श्रृंगार की सीमाओं में आबद्ध होकर रह गर्अ। मध्यकालीन काव्य भावों, विचारों, लोकजीवन, सामाजिक पक्ष आदि की सामान्यत: अवहेलना थी। इस प्रकार मध्यकालीन काव्य जहॉ एक ओर निश्चित धारा में बंधकर रह गया था वहीं दूसरी ओर उसमें सामाजिक पक्ष का निरूपण नहीं हो पाया था। आधुनिक कालीन साहित्य दोनों दृष्टियों से मध्यकाल से भिन्न है। पहली बात तो आधुनिककालीन साहित्य में जो दिखाई देती है वह यह है कि मध्यकालीन साहित्य में व्याप्त स्थिरता और जड़ता के प्रति विद्रोह है जो आधुनिक भावभूमि से भिन्न है। दूसरी ओर जहॉ मध्यकालीन काव्य आध्यातमिकता और अलौकिकता तक ही सीमित रह गया था वहॉ आधुनिक साहित्य में इनके स्थान पर इहलौकिकता की प्रधानता थी। 22

इन्हीं कारणों से हम 1900 वीं सदी से आधुनिककाल का आरंभ मानते हैं। जब से आधुनिक काल की शुरूआत हुई तभी से हम आधुनिकता की भी शुरूआत मानी जाती है। कोई भी बदलाव यों ही नहीं होता है। बदलाव के कुछ कारण होते है। दो संस्कृतियों का अन्तरावलम्बन परिवर्तन के लिए उतने जबाबदार नहीं होते हैं जितने समाज के बुनियादी ढॉचे को बदलनेवाले आर्थिककारण होते है। सांस्कृतिक कारण गौण होते है। पर इन दोनों को लाने का दारयित्व जाने अनजाने अंग्रेजों पर ही रहा है। 1857 के संग्राम के पहले 1757 ई. से ही आधुनिक युग का प्रारंभ हो गया था क्योंकि तभी ईस्टइण्डिया कंपनी ने भारत में आगमन किया था। 1857 के संग्राम में व्यापक स्तर पर विद्रोह होने

पर ही इस्ट इण्डिया कम्पनी को बन्द कर दिया गया। तभी इस देश के लोग कुछ नया सोचने पर बाध्य हुए। अंग्रेजों ने भी अपनी आर्थिक, शैक्षणिक और प्रशासनिक क्रियाओं में परिवर्तन किया। इसी समय भारतेन्दु बाबू का उदय हुआ। उन्होंने साहित्य को मनुष्य के बृहत सुख-दु:ख के साथ जोड़ा और पहली बार खड़ी बोली गद्य का प्रादुर्भाव हुआ।

सन् 1820 में सर टोमस मुनरो ने ‘ इस्तमरारी बन्दोबस्त’ लागू किया, जिसकी वजह से अब जमीन को व्यक्तिगत कर दिया गया। तथा यातायात के साधनों की व्यवस्था बढ़ने लगी। अब गॉव का अनाज गॉव में सीमित न रहकर शहरो में जाने लगा। रेल्वे की सुविधा से संदेश भी जल्दी पहुॅच जाते थे। अंग्रेजों ने जिस यातायात की शुरुआत अपने स्वार्थ के लिए किया था उसका अच्छा प्रभाव भारतवासियों पर पड़ा। उद्योग-धंधें विकसित हुए, कारखाने बनने लगे तथा छुआछूत, जाति-पॉति के भेदभावो में कमी आई, पत्र-पत्रिकाएं, सम-सामयिक किताबें अब दूर-दूर तक जाने लगी। जिससे स्वतंत्रता आन्दोलन में सहायता मिली। नयी अर्थव्यवस्था तथा नई शिक्षा नीति की शुरुआत की वजह से लोगों में ऐसी चेतना उत्पन्न हुई कि वे अपने देश की कठिनाइयों को दूर करने का प्रयास करने लगे। इसलिए उन्होंने प्रेस की शुरुआत की। लोगों के मन में पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों के द्वारा देशभक्ति की भावना उत्पन्न हुई तथा स्वाधीनता के लिए उन्हें और प्रोत्साहन मिला। देश में होनेवाली हर घटनाओं को अनके माध्यम से हर एक देशवासियों तक पहुॅचाया साथ ही साथ देश में चल रहे कुरीतियों तथा परम्पराओं को दूर करने के लिए भी इन पत्र-पत्रिकाओं का सहारा लिया गया। इसी वजह से लोगों में ‘ नवजागरण’ की उत्पत्ति हुई। लोगों को आर्यसमाज, ब्रह्मसमाज, प्रार्थनासमाज, थियोसोफिकल सोसायटी जैसी संस्थाओं ने सामाजिक कुरिवाजों को दूर करने के लिए तथा मानवधर्म को समझाने के लिए प्रयत्न किया गया। जिसमें वे सफल भी हुए तभी आज हर एक स्त्री को जीने का, पढ़ने का, नौकरी करने का, तथा पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने का हक प्राप्त हुआ है। छुआ-छूत, जाति-पॉति जैसी चीजों का नष्ट होना, विधवा विवाह, तथा सती प्रथा पर रोक इस बात का सबसे बड़ा उदाहरण हैं।

नवजागृति के अविर्भाव से तथा पाश्चात्य संस्कृति के मेल से , देश के प्रत्येक क्षेत्र जैसे राजनीतिक, आर्थिक, साहित्यक एवं सांस्कृतिक में परिवर्तन आया जिसके परिणाम स्वरूप साहित्य भी अपने आप को अछूता न रख पाया। हिन्दी साहित्य में भी अनेक विधाओं का जन्म हुआ जिसकी चर्चा मैंने अध्याय- 1 के अन्तर्गत विस्तार से कर दिया है। यह सब विधाएँ आधुनिककाल में ही शुरू हुई। यहॉ हमारा विषय केवल ‘हिन्दी कहानी’ का है, इसलिए हम कहानी के बारे में ही चर्चा करेंगें।

हिन्दी कहानी

आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य का प्रादुर्भाव भारतेन्दु युग (1866-1900) में माना जाता है । किन्तु कलात्मक दृष्टि से इसका आरम्भ द्विवेदी युग (1900-1917) में हुआ। सुधारवादी आन्दोलन तथा 1857 के संग्राम ने हमारी सामाजिकता में पुनर्जागरण की क्रिया को स्फूर्ति दी तथा समाज में नवचेतना का प्राण फूँकने एवं देश में नवप्रकाश लाने के लिए इन दोनों घटनाओं ने लेखकों के सामने असंख्य कथा-वस्तुओं और घटनाओं को उपस्थित किया और उन्हें अपनी मूक वाणी में आमंत्रित किया कि वे इन धरातलों से नवीन साहित्य का निर्माण करें। इसी वजह से इस युग के तमाम साहित्यक उन्नायकों (विशेषकर भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द) के व्यक्तित्व पर स्पष्ट रूप से राजनीतिक, समाज-सुधारक, धर्मोपदेश और प्राचीन संस्कृति के उन्नायक की छाप है।

इस युग में कहानी के साथ -साथ नाटक और उपन्यास का भी खूब विकास हुआ है। मुख्य रूप से भारतेन्दु हरिश्चन्द ने आधुनिक कथा साहित्य में उपन्यास और नाटकों के विकास नहीं कर पाए। इसके जवाब में डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल का कहना है कि " उस समय तक भारतवर्ष में आधुनिक कहानी कला का बहुत ही अस्पष्ट रूप आ सका था। बंगला भी अभी पश्चिम से केवल उपन्यास कला सीख रहा था। भारतेन्दु विशेषकर प्राचीन संस्कृत नाटकों को अनूदित करने तथा मौलिक नाटकों को लिखनें में व्यस्त थे। उन्हें शायद कहानी कला की ओर ध्यान देने का अवसर नहीं मिला और वे शायद यह समझते थे कि साहित्यक क्रान्ति में कहानी का विशेष महत्व नहीं हैं। ''
23

इस युग के अन्य लेखक भी नाटक और उपन्यास में ज्यादा व्यस्त थे। कहानियाँ बहुत कम लिखी गई थीं। भारतेन्दु ने प्राचीन तथा नवीन दोनों प्रकार के साहित्य को उपस्थित किया। उन्होंने साहित्य की समस्त प्राचीन विधाओं को विषय तथा प्रतिपादन शैली विषयक नवीन जल देकर उसे अभिसिंचित किया। परन्तु वे उस समय की कठिनाइयों के प्रभाव से न बच पाए। डॉ. ब्रह्मदत्त शर्मा ने कहा है कि --" इन्होंने एक कहानी ' कुछ आप बीती कुछ जग बीती ' तथा एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न' की रचना की। पहली कहानी उत्तम पुरुष प्रधान शैली में वर्णित है। उसमें बीच-बीच में उर्दू शब्दों का प्रयोग हुआ है तथा छन्दो का चटकीलापन भी प्रचुर मात्रा में मिलता है। यद्यपि कथा वस्तु के वर्णन में पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को उपस्थित करने की ओर अधिक ध्यान दिया गया है। परन्तु कहानी के सब तत्वों के दर्शन इसमें नहीं होते। इसमें पात्रों के संवाद प्रभाव शून्य हैं। इस

समय तक कहानी कला के विकास में पात्रों के स्वाभाविक तथा प्रभावपूर्ण संवादों को स्थान नही मिला था। इसकी कथा वस्तु के प्रति पाठक का कौतूहल उत्तरोत्तर विकसित होता नहीं चलता। इनकी दूसरी कहानी ' एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न' यद्यपि व्यंग्यात्मक निबन्ध के रूप में है किन्तु इसमें एक कथा भी मिलती है। अतएव रचना के इस रूप को 'कहानी' के समकक्ष मानना चाहिए। '' 24

भारतेन्दु युग में कहानी का विकास नहीं हुआ था परन्तु द्विवेदी युग में कहानी का आरम्भ सही रूप से माना गया तथा उसका विकास होना शुरू हुआ। द्विवेदी युगीन कहानियों पर संस्कृत की नैतिक संदेश प्रदान करने वाली लोककथाओं की उपदेशात्मक वृत्ति और द्विवेदी युगीन भारतीय जीवन चेतना की आदर्शवादी दृष्टि का प्रभाव है। " इस समय की आरम्भिक कहानियों में रहस्य रोमांच (इन्दुमती - 1900) हृदय परिवर्तन (एक टोकरी भर मिट्टी - 1901) प्रेम के आदर्श रूप (ग्यारह वर्ष का समय - 1903) मनोरंजक घटना (दुलाईवाली - 1907) चरित्र सुधार (कानों में कंगना - 1913) आदि का वर्णन निश्चित सिद्धान्तों और आदर्शो के प्रभाव में किया गया है। अलौकिक आकस्मिक संयोग, अद्भुत तत्व अथवा कुतूहल की सृष्टि में ये कहानियॉं मनोरंजन मनबहलाव या समय बिताने का साधन मात्र रह गई है। वस्तुतः सामाजिक यथार्थ का वह बोध इन कहानियों मे है ही नहीं जो सामाजिक जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा कर सकता है। '' 25

भारतेन्दुकाल में कहानी अपने शैशवकाल में थी पर प्रेमचन्द युग में अपने यौवनकाल में पहुॅच गई। प्रेमचन्द जी युगान्तकारी कहानीकार थे। सर्वप्रथम प्रेमचन्द जी के ही द्वारा हिन्दी में मौलिक कहानियों के दर्शन हुए। वे कहानियॉं कहानी कला और साहित्यक दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण थी। प्रेमचन्द की प्रारम्भिक कहानियॉं अपने विषय और रूप की दृष्टि से द्विवेदी युग के घरेलू जीवन के कथा साहित्य के आधार पर लिखी गई है। वे जीवन का बहुत कम चित्रण करते हैं परन्तु उसकी भूमिका के प्रयास के लिए पर्याप्त करते है। वे कहानी को स्वप्न जगत से निकालकर वास्तविक जगत में लाते हैं और विषय को सामाजिक तथा कथावस्तु को विश्वसनीय बना देते हैं, जिससे कहानी इसी जगत की कथा वस्तु हो जाती है। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि कैसे वे अपनी कहानियों में उस समस्त सामाजिक ढॉंचे का चित्रण दे देते हैं इसी सन्दर्भ में डॉ. इन्द्रनाथ मदान कहते हैं--" अपनी आरम्भिक रचनाओं में उन्होंने चरित्र-चित्रण की अपेक्षा कथावस्तु पर विशेष ध्यान रखा है। इन कहानियों में घटनाओं और प्रसंगों की श्रृंखला पात्रों और विचारों को घेरे हुए है। सामाजिक ध्येय की ओर संकेत नहीं किया गया वरन् उसे प्रकट कर दिया गया है। विभिन्न प्रकार की रुचि रखनेवाले पाठक बिना किसी आधार के उनकी जो इतनी अधिक प्रशंसा करते है इसका कारण यह है कि उनकी

इन कहानियो में विचारों और पात्रों की अपेक्षा कथावस्तु की प्रधानता है तथा इनमें मध्यमवर्गीय विचाराधारा का समावेश है। मध्यमवर्ग के दृष्टिकोण की विशेषता 'प्रतिकार' तथा जो जैसा करेगा वह वैसा ही भरेगा' की भावना है और वह उसके मस्तिष्क में बुरी तरह घर कर गई है। 26

इसी पर श्री व्यथितहृदय का कहना है कि " प्रेमचंद ने हिन्दी साहित्य में कहानी का एक नया युग सीापित किया। हिन्दी की जो कहानी अभी तक दैवी घटनाओं और चमत्कारों के जाल में उलझी हुई थी, उसे वे खींचकर जन-जीवन के संसार में ले आए, इतनी ही नहीं, प्रेमचंदजी के पूर्व जहॉ वह अमीरों और राजा-रईसों के चित्रण का पट बनी हुई थी, वहॉ जब वह गरीबों, दुखियों और अभाव पूर्ण किसानों के जीवन से अपना श्रृंगार करने लगी। हिन्दी में सर्वप्रथम प्रेमचन्दजी ने कहानी में अभाव पूर्ण मानव जीवन के चित्र अंकित किये। इतना ही नहीं, सर्वप्रथम वे ही अभावपूर्ण और उपेक्षित मानव के मन में घुसने में भी समर्थ हो सके, और सर्वप्रथम उन्होंने ही एक कुशल मनोवैज्ञानिक की भॉति उसके मन के द्वन्द्वों का चित्रण किया।'' 27

प्रेमचन्द का कहानी साहित्य इतना विशाल और विस्तृत है कि उसमें समूचा एक युग समा गया है। प्रेमचन्द की हिन्दी एवं उर्दू कहानियों की संख्या 302 है। ये सारी कहानियॉं लम्बे समय के अन्तर्गत लिखी गई हैं, इस कारण इनमें कलात्मक विकास की कई भूमियों का दिखाई देना स्वाभाविक है। आरम्भिक कहानियों में कला की दृष्टि से वह सफाई खराद और काट-छॉट नहीं है जो परवर्ती कहानियों में हैं आरम्भिक कहानियॉ अधिकतर लम्बी और वर्णनात्मक है, जबकि पीछे की कहानियॉ अधिकतर गठी है। संक्षिप्त तथा नाटकीय प्रभाव से सम्पन्न है, मानो एक प्रभावशाली चित्र का प्रदर्शन कर समाप्त हो गई है। केवल कला दृष्टि से नहीं भावों और विचाारों की प्रौढ़ता की दृष्टि से भी आरम्भ और अन्त की कहानियों में अन्तर आ गया है। प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों एवं साहित्य में प्राचीन चेतना से लेकर प्राय: समस्त आधुनिक पश्चिमीभाव-धाराओं का सफल प्रयोग है। भारत में हो रहे सामाजिक और राजनीतिक आन्दोलनों का प्रभाव उसके साहित्य पर पड़ा। प्रेमचन्द का समय गांधीजी के उद्‌भव का समय था। वे गांधीजी के प्रभाव में आए। इसके अलावा भी स्वाधीनता आन्दोलन की कई चीजों से प्रेमचन्द प्रभावित हुए थे, जो हमने आगे के उप-अध्याय में देखा है। प्रेमचन्द के साहित्य में हमें समाज एवं राजनीति की वह झॉकी कूट कूट कर मिलती है। उन्होंने अपने साहित्य में अपने समाज की रूढ़िगत त्रुटियों पर वार किया है न कि नये संसार की रचना की है। प्रेमचन्द ने हमारे सामाजिक प्रश्नों को समस्त देश के जीवन मरण के रूप में संसार के सामने रखा है। यही उनकी सबसे बड़ी साहित्यक देन है। इसी सन्दर्भ में डॉ. इन्द्रनाथ मदान का मानना है। कि --"

इनका उद्देश्य सामाजिक है। वे सामाजिक उद्देश्य को लेकर लिखते थे और उन्होंने कहानी को उन्नति और सुधार का साधन बनाया है। उनके अनुसार कहानी का प्रमुख ध्येय पाठक को किसी घटना, किसी पात्र या किसी वातावरण द्वारा ऊँचा उठाने के लिए एक तीव्र विचार की अनुभूति करा देना मात्र है। उन्होंने कहा है कि कहानी को जीवन के किसी अंश पर प्रकाश डालना चाहिए। उसे आलोचना और उत्साह के साथ समाज की परीक्षा करनी चाहिए। उसे मनुष्य की सत्यं, शिवं और सुन्दरम् की स्वाभाविक प्रवृत्ति को जाग्रत करना चाहिए। '' 28

प्रेमचन्द एक ऐसे समर्थ कलाकार है जिन्होंने कहानी को साधारण मनोरंजन, सस्ती भावुकता से ऊपर उठाकर उसे जन जीवन और सामाजिक मूल्यों से जोड़ने का सफल प्रयास किया है। प्रेमचन्द की कहानियॉ यथार्थ से जुड़ी हुई होने के कारण कहानी अतीत से मुक्त होकर अब वर्तमान से प्रतिबद्ध हो गई थी। कहानी की संवेदना में आया हुआ यह सबसे बड़ा परिवर्तन था। कहानीकार प्रेमचन्द का अवतरण सबसे पहले उर्दू में हुआ था। जिसमें वे ' नबाबराय ' के नाम से लिखते थे। सोजेवतन ' इसका प्रमाण है। " प्रेमचन्द ने 1907 से लेकर 1917 ई. तक उर्दू में आठ-दस कहानियॉ लिखी है। जिनमें प्राय: ये कहानियॉ आती है - बड़े घर की बेटी, रानी सरंधा, राजा हरदौल, जुगनू की चमक, गुनाह का अग्निकुंड, नमक का दरोगा आदि। इस तरह प्रेमचंद की उर्दू कहानियॉ मुख्यत: जमाना की फाइलों में आई और आगे भी आती रही। संख्या करने से इनकी कुल उर्दू कहानियॉ 178 हैं लेकिन 1917 के उपरान्त प्रेमचन्द हिन्दी संसार के कहानीकार हो गये। '' 29

हिन्दी में प्रेमचन्द का गौरवपूर्ण स्थान है। कहानीकार के रूप में वे विख्यात हैं। उन्होंने 302 कहानियॉ लिखी है जो उनके विभिन्न कहानी संग्रहों में मौजूद है। उनके कहानी संग्रह के नाम इस प्रकार है

प्रेम प्रतिमा, प्रेमतीर्थ, प्रेम पीयूष, प्रेमकुंज, प्रेम पूर्णिमा, प्रेम प्रसून, नवनिधि, प्रेमद्वादशी, प्रेमपच्चीसी, प्रेम चतुर्थी, मनमोदक, समरयात्रा, सप्तसरोज, अग्नि समाधि, प्रेमगंगा, सप्त सुमन, मानसरोवर 8 भाग, नारी जीवन की कहानियॉ, ग्राम जीवन की कहानियॉ, कुत्ते की कहानी, जंगल की कहानी, प्रेम प्रमोद, प्रेमसरोवर, प्रेम पंचमी, प्रेरणा गल्पगुच्छ, नवजीवन, पॉचफूल, मृतक भोज, कफन और अभी हाल में ही प्रकाशित प्रेमचन्द की कहानियों का सम्पूर्ण संग्रह- प्रेमचन्द की संपूर्ण कहानियॉ , नाम से प्रकाशित हुआ है। प्रेमचन्द जी ने जिस समय हिन्दी के क्षेत्र में पर्दापण किया , उस समय हिन्दी का उषा काल चल रहा था। लोगों में पुनर्जागरण हो रहा था तथा साहित्य में उसी से आधारित रचनाओं की रचना हो रही थी। तो भला प्रेमचन्द जी अपने आप को उससे कैसे बचा पाते।

विषय की दृष्टि से प्रेमचन्द जी की कहानियॉ मुख्यत: सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों से सम्बद्धित थीं। समाज की सीमा में ग्रामीण और नगर के क्षेत्र आते हैं। दोनों ही क्षेत्रों को लेकर उनकी कहानियॉ लिखी गई हैं। राजनीतिक, विषयों में से प्राय: वे सभी विषय आ गये हैं जो भारतीय राजनीति के तत्कालीन ज्वलन्त प्रश्न थे। इसके अलावा आर्थिक क्षेत्र से आधारित भी कहानियॉ लिखी गई हैं। प्रेमचन्द ने कुछ सामाजिक, राजनैतिक और कुछ आर्थिक कहानियॉ लिखी हैं जो इस प्रकार हैं --

सामाजिक कहानी:---

बेमेल विवाह, दहेज की कुप्रथा, पुरुष की अनेक शादियों की स्वच्छन्दता, बाल- विवाह, गरीब औा अमीर का विवाह, वेश्याचार, लड़कियों को बेचना, जुआ, नशेबाजी, छुआ-छूत, जात-पॉत, ठाकुरों का अत्याचार, किसानों की मजबूरी, मंदिर में प्रवेश न मिलना, पारिवारिक झगड़े, संयुक्त कुटुंब की भावना, पारिवारिक दु:ख, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, शहरी तथा ग्रामीण जीवन का तालमेल, निम्न जाति की स्त्रियों की पीड़ा, नारी-शोषण, अंध-विश्वास, यौन शोषण, पारिवारिक विघटन, प्रेम संबंधी कहानियॉ, खोये हुए संबंध, पुरुषों का विदेश जाकर पत्नी को भूल जाना, डॉक्टर की लापरवाही, अमीरों का गरीबों की मदद न करना, पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुॅह मोड़ना आदि विषयों को केन्द्र में रखकर भी प्रेमचन्द जी नें कहानियॉ लिखी हैं।

राजनीतिक कहानी:---

गरीबी, बेकारी, किसानों की समस्या, जमीदारी प्रथा की बुराइयॉ, पराधीनता, पोषित अन्य कहानियॉ, स्वाधीनता आन्दोलन, दारूबंधी, विदेशी कपड़ो का बहिष्कार, देशभक्ति की भावना प्रधान तथा देश की राजनीति पर व्यंग्य प्रधान कहानियों का जिक्र इस श्रेणी में कर सकते है।

आर्थिक:--

नौकरी के लिए शहरों में जाना, लगान की वजह से सूद का बढ़ना, किसानों की पीढ़ी दर पीढ़ी का ऋण के बोझ में दबे रहना, पैसों की तंगी के कारण खेतों को कम दामों में बेचना, किसान का मजदूर बनना आदि से सम्बन्धित कहानियों को आर्थिक स्थिति के अन्तर्गत ले सकते हैं।

उपरोक्त विषय से संबंधित कहानियों की चर्चा क्रमश: चौथे और पांचवे अध्याय में विस्तार से की गई है।

सन्दर्भ-सूची

1. श्रेष्ठ कहानियॉ - सम्पादक -- डॉ. मायाप्रकाश पाण्डेय, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-- 2009, पृष्ठ-03
2. श्रेष्ठ कहानियॉ - सम्पादक -- डॉ. मायाप्रकाश पाण्डेय, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-- 2009, पृष्ठ-03
3. कहानीकार प्रेमचन्द -- डॉ. सुशील कुमार फुल्ल एवं आशु फुल्ल, भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण -- 2001, पृष्ठ-10
4. कहानीकार प्रेमचन्द रचना दृष्टि और रचना शिल्प -- शिवकुमार मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहावाद, प्रथम संस्करण -- 2002, पृष्ठ-08
5. प्रेमचन्द और शैलेष मटियानी की कहानियों में दलित विमर्श -- डॉ. कल्पना -गवली, चिन्तन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण -- 2005, पृष्ठ-17
6. हिन्दी कथा साहित्य -- गंगा प्रसाद पाण्डेय, भारती भण्डार लीडर प्रेस, इलाहावाद, प्रथम संस्करण -- 2008, पृष्ठ-20-21
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास -- संपादक -- डॉ. नगेन्द्र -- पृष्ठ-474-475
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास -- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल -- पृष्ठ-345
9. हिन्दी साहित्य का इतिहास -- संपादक -- डॉ. नगेन्द्र -- पृष्ठ-522
10. भारतीय स्वातंत्र्य आन्दोलन और हिन्दी साहित्य - डॉ. कीर्तिलता, पृ. - 1-2
11. भारतीय स्वातंत्र्य आन्दोलन और हिन्दी साहित्य - डॉ. कीर्तिलता, पृ. -2
12. भारतीय स्वातंत्र्य आन्दोलन और हिन्दी साहित्य - डॉ. कीर्तिलता, पृ. - 3
13. भारतीय स्वातंत्र्य आन्दोलन और हिन्दी साहित्य - डॉ. कीर्तिलता, पृ. - 6-7
14. भारतीय स्वातंत्र्य आन्दोलन और हिन्दी साहित्य - डॉ. कीर्तिलता, पृ. - 7-8
15. 1857 के स्वाधीनता संग्राम का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव - डॉ भगवान दास माहौर, पृ.- 19
16. स्वाधीनता आन्दोलन और प्रेमचंद - डॉ. जगतनारायण हैकरवाला, पृ.-37 -38
17. स्वाधीनता आन्दोलन और प्रेमचंद - डॉ. जगतनारायण हैकरवाला,पृ.- 38 -39
18. स्वधीनता आन्दोलन और प्रेमचंद - डॉ. जगतनारायण हैकरवाला , पृ. - 42
19. स्वाधीनता आन्दोलन और प्रेमचंद - डॉ. जगतनारायण हैकरवाला,पृ. - 46-47
20. साहित्य धारा - प्रकाशचन्द गुप्त - पृ. - 74-75

21. हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास - डॉ. लक्ष्मीलाल वैरागी, पृ. - 257
22. हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास - डॉ. लक्ष्मीलाल वैरागी, पृ.- 257- 258
23. हिन्दी कहानियों की शिल्प-विधि का विकास - डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल पृ. - 41-42
24. हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन - डॉ. ब्रह्मदत्त शर्मा, पृ. - 88
25. स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी कहानी में लक्षित अलगाव की अवधारणा -डॉ. बिन्दू दूबे, पृ. - 50
26. प्रेमचन्द एक विवेचन - डॉ. इन्द्रनाथ मदान, पृ. - 126
27. कहानी कला और कलाकार - श्री व्यथित हृदय, पृ. - 56
28. प्रेमचन्द : एक विवेचन - डॉ. इन्द्रनाथ मदान, पृ. - 128
29. हिन्दी कहानियों का शिल्प-विधि का विकास -डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, पृ.-97